सम्पादकीय

सी.सी.आर.ए.एस. की अनुसंधान एवं विकास नीतिः ट्रांसलेशनल अनुसंधान की दिशा में

केंद्रीय आयुर्वेद विज्ञान अनुसन्धान परिषद् (सी. सी. आर. ए. एस.) राष्ट्रीय प्राथमिकता के अनुसार महत्वपूर्ण रोग सम्बंधित क्षेत्र में अनुसंधान प्रवर्तन एवं प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्ध है। इसलिए परिषद् की अनुसंधान नीति, अपने वैज्ञानिकों को अनुसंधान परियोजना के सूत्रीकरण, प्रस्तुतीकरण एवं निष्पादन के लिए प्रोत्साहित करने की तरफ लक्षित है, ताकि औषधी/उपचारों के प्रभावकारिता एवं सुरक्षा एवं अन्य मुलभूत सिद्धांत आधारित चिकित्साविधान आदि हेतु गुणवत्तापूर्ण आकड़ो का संकलन कर वैज्ञानिक मान्यता प्रदान की जा सके।

सी.सी.आर.ए.एस. ने आंतरिक वैज्ञानिकों, बाह्य वैज्ञानिकों के लिए नीतियों के साथ– साथ विदेशों में सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए एवं पहले से ही विपणन वाली आयुर्वेदिक दवाओं के लिए अनुसंधान एवं विकास नीतियों का भी निर्धारण किया है। परिषद् ने अन्तः वर्ती अनुसंधान नीति को अपनाया है जिसके द्वारा सी.सी.आर.ए.एस. के नियमित वैज्ञानिकों को यह स्वतंत्रता प्राप्त हो कि वे राष्ट्रीय प्राथमिकता के क्षेत्रों एवं आयुर्वेद के क्षमता वाले क्षेत्रों को ध्यान में रख कर परियोजना का विकास करें। सी.सी.आर.ए.एस. राष्ट्रीय स्तर और अंतरराष्ट्रीय मंच पर सहयोगात्मक अनुसंधान योजना के तहत विभिन्न आयुर्वेद औषधियों के अन्य चिकित्सा विधि के साथ एकीकरण और सुरक्षा अध्ययन हेतु कई प्रमुख अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से कार्य कर रही है। परिषद् ने विपणन वाली दवाओं के अनुसंधान को बढ़ावा देने तथा अनुसंधान उत्पादों के व्यवसायीकरण हेतु उद्योगों के साथ अनुसंधान के लिए नीति का निर्धारण किया है ताकि जनता द्वारा इन उत्पादों का उपयोग किया जा सके।

सी.सी.आर.ए.एस. वर्तमान नीति के माध्यम से, परिषद् शास्त्रीय आयुर्वेद दवाओं की सुरक्षा और प्रभावकारिता के पुष्टि के लिए कार्य कर रही है। यह शोधकर्ताओं और चिकित्सकों के लिए भारत और विदेशों में चिकित्स्य अभ्यास हेतु एक मूल दस्तावेज के रूप में मदद करेगा। परिषद् ने 24 व्याधियों/अवस्थाओं पर लगभग 82 शास्त्रीय आयुर्वेदीय योगों की सुरक्षा एवं प्रभावकारिता पर वैज्ञानिक साक्ष्य उत्पन्न किया है। राष्ट्रीय हित की प्रमुख व्याधियों/अवस्थाओं के उपचार हेतु लगभग 32 शास्त्रीय आयुर्वेदीय योगों की सुरक्षा और प्रभावकारिता का साक्ष्य तैयार करने के लिए उपर्युक्त योगों की माननीकरण संबंधी प्रक्रिया जारी है।

परिषद्, भारत के विभिन्न हिस्सों से एकत्र लोक प्रचलित चिकित्स्य दावों से प्राप्त सूचना के आधार पर नवीन दवाइयों के विकास से सम्बंधित कार्य कर रही है, परिषद् ने सी.सी.आर.ए.एस. द्वारा विकसित दवाओं को आम जनों के उपयोगिता के रूप में उपलब्ध कराने के लिए उन दवाओं का व्यावसायीकरण भी किया; अभी तक मधुमेह के लिए आयुष – 82, मलेरिया के लिए आयुष – 64, रुमेटोइड आर्थराईटिस के लिए आयुष एस. जी. इत्यादि, के साथ साथ विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए 12 दवाइयों को विकसित किया है। परिषद् ने प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य सेवा (आरसीएच) कार्यक्रम के लिए 10 आयुर्वेदीय योगों का विकास किया है। वर्त्तमान में, परिषद् सहयोगात्मक अनुसंधान द्वारा राष्ट्रीय महत्व के कई रोगों हेतु कोडेड दवाएं यथा मानसिक मंदता के लिए आयुष मानस, कैंसर के लिए आयुष क्यू. ओ. एल. 2सी, वृद्ध परिचर्या के लिए आयुष रसायन ए एंड बी, जख्म को भरने के लिए सी1 हर्बल तेल, डेंगू के लिए आयुष पीजे–7, माइग्रेन के लिए आयुष एम–3, फिलेरीयासिस के लिए आयुष एसएल, ब्रोंकिअल अस्थमा के लिए आयुष–ए, टाइप–२ डायबीटिज मेलिटस के लिए आयुष डी, कैंसर के लिए कर्कटोल एस, जीर्ण वृक्क रोग के लिए आयुष के1 दवाओं के विकास प्रक्रिया के विभिन्न चरण में कार्यरत है।

ट्रांसलेशनल अनुसंधान द्वारा सर्व जन स्वास्थय के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, शास्त्रीय आयुर्वेद ग्रंथों से वैज्ञानिक साक्ष्य सृजन करने, पांडुलिपियों को पुनर्जीवित करने, भारत में प्रचलित लोक चिकित्सा संबंधी परंपराओं से चिकित्स्य साक्ष्य सृजन उचित क्रमानुसार अनुसंधान के द्वारा प्राप्त करना ही, अनुसरण किये जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परिषद्, आयुर्वेदिक सिद्धांतों के सम्बन्ध में वैज्ञानिक प्रमाण विकसित करने, आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ प्राचीन ज्ञान को एकीकृत करने और आयुर्वेद के निदान, निवारक, प्रोत्साहनकारी सम्बंधित अन्वेषणों के साथ साथ उपचारात्मक विधियों के माध्यम से आयुर्वेद को लोगों के बीच लाने एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में इन अन्वेषणों को लागू करने के लिए संबंधित संगठनों के साथ सहयोग करने हेतु अपने विजन 2030 पर कार्य कर रही है। इसके लिए परिषद् अपने सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लिए विजन 2030 को 15 वर्ष की रणनीति, 7 वर्ष की रणनीति (दीर्घकालिक विजन) और 3 वर्ष की कार्य योजना के साथ कार्य कर रही है।

ट्रांसलेशनल अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य यह है कि मौलिक अनुसंधान से प्राप्त परिणामों को चिकित्सा पद्धति में अनुवादित करना, जिससे स्वास्थ्य संबंधी सार्थक परिणाम प्राप्त हों। यह परिषद् के विजन दस्तावेज और नीति द्वारा बहुत ज्यादा परिलक्षित होता है जो सार्वजनिक उपयोगिता के लिए शास्त्रीय आयुर्वेद और नवीन रूप से विकसित आयुर्वेद दवाओं पर पूर्ण तरह से शोध किये गए साक्ष्य प्रदान करने के अंतिम लक्ष्य को सिद्ध करने हेतु कार्य कर रही है।

वैद्य के एस धीमान
मुख्य संपादक एवं महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

Editorial

CCRAS R&D Policy toward Translational Research

The Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS) is committed to promote research in important disease areas of national priority. Therefore, the research policy of the CCRAS is aimed at encouraging its scientists for the formulation, submission, and execution of research projects for generating quality data for scientific validation of safety and efficacy of formulations/therapies and other interventions including basic principles. The CCRAS has laid policies for internal scientists and external scientists for collaborative research in abroad as well as R&D policy for already marketed drugs. The council has adopted IntraMural Research Scheme by which the regular scientific staff of CCRAS are at liberty to develop the project keeping in view the national priority areas and strength areas of Ayurveda. The CCRAS is also working in collaboration with many premier research institutions for integrative and safety studies of various Ayurveda interventions under a collaborative research scheme at national level and at international platform. The council has also laid policy for research with the industries for promoting research and commercializing the research product so it can be utilized by public at large.

Through present policy of CCRAS, the council is working toward validation of safety and efficacy of classical Ayurveda drugs. It would serve as a basic document of researchers and clinicians for implementation in practice in India and abroad. The council has generated scientific evidence on safety and efficacy of various classical Ayurvedic formulations on 24 diseases/conditions. Validation of approximately 32 classical Ayurvedic formulations is continuing for generation of scientific evidence on safety and efficacy on major diseases/conditions of national interest.

The council is also working toward development of new drugs, taking leads from Ayurveda literature and from folklore claims collected from different parts of India. The council is also commercializing the drugs developed by CCRAS for making it available for public utility; it has so far developed 12 drugs for various ailments including Ayush-82 for diabetes, Ayush 64 for malaria, Ayush SG for rheumatoid arthritis, etc. The council has also developed 10 Ayurvedic formulations for reproductive and child health care program. Presently, the council is engaged in many collaborative studies for the development of coded drugs for several diseases of national importance including Ayush Manas for mental retardation/cognitive deficit, Ayush QOL 2C for improving quality of life in cancer patients, Ayush Rasayana A&B for geriatric health, C1 herbal oil for wound healing, Ayush PJ-7 for dengue, Ayush M-3 for migraine, Ayush SL for filariasis, Ayush A for bronchial asthma, Ayush D for type II diabetes mellitus, Carctol S for cancer, Ayush K1 for chronic kidney diseases, which are at different phases of drug development.

In order to provide *health for all*, translational research including generation of scientific evidence from the classical Ayurveda texts, manuscript revival, and folklore traditions prevalent in India by proper series of research is the most important path to be followed. To achieve this goal, the council is working toward its vision 2030, to develop scientific evidence in Ayurvedic principles, drug therapies by way of integrating ancient wisdom with modern technology and to bring Ayurveda to the people, through innovations related to diagnostics, preventive, promotive, as well as treatment methods and in synergy with concerned organizations to introduce these innovations into public health systems. For this, the council is working toward its sustainable development goals for vision 2030 with a 15 years strategy, 7 years strategy (long-term vision), and 3 years action plan.

The main aim of translational research is that the findings in basic research are to be translated into medical practice that will lead to meaningful health outcomes. It is very much reflected by the council's vision document and the policy which is working toward proving the ultimate goal of providing the perfectly researched evidence-backed Ayurveda and newly developed Ayurveda drug for public utility.

Vaidya K S Dhiman
Editor-in-Chief and Director General
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences
Ministry of AYUSH, Government of India, New Delhi, India